

पाठ – गीत-अगीत

शब्दार्थ-व्याख्या

1. गाकर गीत कौन सुंदर है?

शब्दार्थ

- तटिनी – नदी, तटों के बीच बहती हुई
- वेगवती – तेज गति से
- उपलों – किनारों से
- विधाता – ईश्वर
- निर्झरी – झरना, नदी
- पाटल – गुलाब

व्याख्या – कविता के इस भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कवि ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहता है कि नदी को बहता हुआ देखते हुए ऐसा लगता है जैसे नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कवि कहता है कि किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब किनारे पर चुपचाप खड़ा है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गाया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

2. बैठा शुक कौन सुंदर है?

शब्दार्थ

- शुक – तोता
- खोंते – घोंसला
- पर्ण – पत्ता, पंख
- शुकी – मादा तोता

व्याख्या – कविता के इस भाग में कवि तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। कवि कहता है कि जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता।

उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। अर्थात् वह

बहुत खुश है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गाया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

3. दो प्रेमी हैं कौन सुंदर है?

शब्दार्थ –

- आल्हा – एक लोक-गीत का नाम
- कड़ी – वे छंद जो गीत को जोड़ते हैं
- बिधना – भाग्य, विधाता
- गुनती – विचार करती है
- वेग – गति

व्याख्या – कविता के इस भाग में कवि दो प्रेमियों का वर्णन करता हुआ कहता है कि वन में दो प्रेमी रहते हैं। दोनों प्रेमियों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है तो उसकी प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। जब प्रेमी गाता है तो प्रेमिका का मन प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गाया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर- नदी किनारों को अपना विरह गीत सुनाते भागी जा रही है। नदी को ऐसा करता देख किनारे पर खड़ा गुलाब सोचता है कि यदि विधाता ने उसे वाणी दी होती तो वह भी पतझड़ के सपनों का गीत संसार को सुनाता।

इससे संबंधित पंक्तियाँ हैं-

“देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।”

(ख) जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- वसंती किरणों के स्पर्श से प्रसन्न हो शुक जब गीत सुनाता है तो वह गीत शुकी के मन को छू जाता है। उसके पंख फूल जाते हैं। उसके मन में भी स्नेह भरे गीत उमड़ने लगते हैं, पर वह गा नहीं पाती है। उसका हृदय प्रसन्नता से भर जाता है।

(ग) प्रेमी जब गीत गाता है, तब प्रेमिका की क्या इच्छा होती है?

उत्तर- जब प्रेमी प्रेम गीत गाता है तो उसके गीत का पहला स्वर उसकी राधा (प्रेमिका) को उसके पास खींच लाता है। वह नीच की छाया में चोरी-चोरी गीत को सुनती है। वह भाव-विभोर हो उठती है। उसकी इच्छा होती है कि वह गीत की कड़ी बनकर प्रेमी के होंठों को स्पर्श कर ले।

(घ) प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए।

उत्तर- कविता के प्रथम छंद में प्रकृति का सजीव चित्रण किया गया है। कवि ने नदी को विरहिणी नायिका के रूप में चित्रित किया है जो अपना दिल हल्का करने के लिए किनारों से बातें करती तेजी से सागर की ओर भागी जा रही है। नदी के किनारे खड़ा गुलाब इसलिए व्यथित है क्योंकि विधाता द्वारा स्वर न दिए जाने से वह अपनी पतझड़ की कहानी संसार को नहीं सुना पा रहा है।

(ङ) प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों का संबंध आदिकाल से रहा है। उनका यह संबंध आज भी घनिष्ठ है। एक ओर पशु-पक्षी अपने भोजन, आवाज एवं आश्रय के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं तो वहीं पशु-पक्षी प्रकृति का श्रृंगार बनकर उसका सौंदर्य बढ़ाते हैं। यदि जंगल में पशु-पक्षियों का कलरव न गूँजे तो कितनी चुप्पी-सी होगी। इसके अलावा पशु-पक्षी प्रकृति को साफ़-सुथरा बनाए रखने में भी अपना योगदान देते हैं।

(च) मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- मनुष्य को प्रकृति नाना रूपों में आंदोलित करती है। इस क्रम में बात प्रातः से शुरू करें तो प्रातःकालीन सूर्य हमें प्रसन्नता से भर देता है। हरियाली हमारी आँखों को सुहाती है। ओस की बूंदें हमें अपनी ओर खींचती हैं। आसमान में छाए काले-काले बादल मन में उल्लास एवं मस्ती जगाते हैं तथा मन को खुशी से भर देते हैं। शाम को छिपता सूर्य मन को शांति से भर देता है। इसके अलावा नदी, पहाड़, झरने, पेड़, पौधे, फूल आदि विविध रूपों में आंदोलित करते हैं।

(छ) सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हमारे जीवन में विभिन्न अवसरों पर मन में तरह-तरह के भाव उठते हैं। इनमें जिन भावों को अभिव्यक्ति का स्वर मिलता है, वे गीत बन जाते हैं और दूसरों के सामने प्रकट हो जाते हैं। इसके विपरीत कुछ अगीत भी होते हैं, जिन्हें हम चाहकर अभिव्यक्ति का स्वर नहीं दे पाते हैं।

(ज) 'गीत-अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।

उत्तर- गीत-अगीत कविता का केंद्रीय भाव है- प्रेम और प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण। इनमें नदी, गुलाब, किनारों के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य, शुक-शुकी के माध्यम से जीव-जंतुओं में प्रेम-भाव तथा प्रेमी एवं उसकी राधा के माध्यम से

मानवीय राग का चित्रण किया गया है। कविता में प्रेम के मुखरित और मौन दोनों अभिव्यक्तियों को सुंदर बताया है, क्योंकि गीत की गूँज सुनने में अच्छी लगती है पर अगीत की अनुभूति भी उतनी ही अच्छी लगती है।

प्रश्न 2. संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए-

(क) अपने पतझड़ के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता

उत्तर-

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'गीत-अगीत' नामक कविता में से उद्धृत है। इस कविता में उन्होंने गीत और मौन अनुभूति की तुलना करते हुए दोनों को सुंदर बताया है। इस पद्यांश में नदी के किनारे खड़ा गुलाब मन-ही-मन सोचता है

व्याख्या - यदि ईश्वर मुझे वाणी का वरदान देता तो मैं संसार को अपने उन दिनों के दुख अवश्य सुनाता जब मैंने स्वयं को पतझड़ जैसा सूना और वीरान अनुभव किया।

(ख) गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर

उत्तर-

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'गीत-अगीत' नामक कविता में से उद्धृत है। इस कविता में उन्होंने गीत और मौन अनुभूति की तुलना करते हुए दोनों को सुंदर बताया है। इस पद्यांश में शुक पर प्रकृति के प्रभाव को दर्शाया गया है।

व्याख्या - कवि कहता है कि जब सूरज की मनमोहक किरणें वृक्ष के पत्तों से छन-छनकर शुक के तन का स्पर्श करती हैं तो वह प्रसन्न होकर गाने लगता है। आशय यह है कि वह प्रकृति की मोहकता से गदगद हो उठता है।

(ग) हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना यों मन में गुनती है।

उत्तर-

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'गीत-अगीत' नामक कविता में से उद्धृत है। इस कविता में उन्होंने गीत और मौन अनुभूति की तुलना करते हुए दोनों को सुंदर बताया है। प्रेमी के प्रेम भरे गीत को सुनकर उसकी प्रेमिका मुग्ध हो उठती है।

व्याख्या - मुग्ध प्रेमिका मन-ही-मन यह सोचती है कि हे विधाता! काश, मैं भी इस आनंदमय गीत की एक पंक्ति बनकर इसमें लीन हो जाती। मैं प्रेमी के प्रेम-भरे भावों में खो जाती।

प्रश्न 3. निम्नलिखित उदाहरण में 'वाक्य-विचलन' को समझने का प्रयास कीजिए। इसी आधार पर प्रचलित वाक्य-विन्यास लिखिए-

(क) देते स्वर यदि मुझे विधाता

उत्तर- यदि विधाता मुझे स्वर देते।

(ख) बैठा शुक उस घनी डाल पर

उत्तर- शुक उस घनी डाल पर बैठा है।

(ग) गूँज रहा शुक का स्वर वन में

उत्तर- शुक का स्वर वन में गूँज रहा है।

(घ) हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की

उत्तर- मैं गीत की कड़ी क्यों न हुई।

(ङ) शुकी बैठ अंडे है सेती

उत्तर- शुक की बैठकर अंडे सेती है।



egyuanarchive